अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

एक परिचय

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ शिक्षा के क्षेत्र में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के वैचारिक अधिष्ठान को लेकर भारतीयता से ओत-प्रोत शिक्षा एवं समाज की संकल्पना वाला संगठन है। महासंघ शिक्षकों के वेतन, भत्ते, सेवाशर्तों व अन्य सुविधाओं के लिये प्रयत्न करने के साथ-साथ अपने राष्ट्रीय लक्ष्य को ध्यान में रखकर शैक्षिक उन्नयन तथा सामाजिक सरोकार के कार्यक्रमों की योजना एवं उनकी क्रियान्विति करता है।

तदनुरूप वर्ष 1988में पूर्व प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक के सम्पूर्ण राष्ट्र के शिक्षकों का राष्ट्रीयता एवं भारतीय जीवनधारा के भाव वाला संगठन अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का विधिवत् प्रारम्भ हुआ। अब महासंघ देशव्यापी है। 24 राज्यों के 35 राज्य स्तरीय संगठन तथा 50 से अधिक विश्वविद्यालयों के संगठन महासंघ से सम्बद्ध हैं।

पंजीकरण एवं केन्द्रीय कार्यालय

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का वर्ष 1993 में पंजीकरण हुआ है, जिसका पंजीकरण संख्या स/25125/1993 है। महासंघ का स्वयं के भवन में केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली में है।

दृष्टि

राष्ट्र के हित में शिक्षा।

शिक्षा के हित में शिक्षक।

शिक्षक के हित में समाज।

संगठन संरचना

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ पूर्णतया स्वतन्त्र एवं स्वायत्त संगठन है जो अपने विधान के अनुसार कार्यकलाप करता है। जिसकी संगठन संरचना संघीय ढांचे के आधार पर है। महासंघ की साधारण सभा में महासंघ के अग्रवर्णित पदाधिकारियों का चुनाव होता है। वर्तमान में अध्यक्ष (1) उपाध्यक्ष (3+1 महिला), महामंत्री (1), अतिरिक्त महामंत्री (1), सचिव (3+1 महिला), संयुक्त सचिव (3+1), कोषाध्यक्ष (1), आंतरिक अंकेक्षक (1)। संगठन मंत्री सहसंगठन मंत्री एवं उच्च शिक्षा संवर्ग के प्रभारी के रूप में तीन पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता इसमें कार्यरत हैं। विभिन्न प्रकोष्ठों एवं आयामों के प्रमुखों के अलावा 9 क्षेत्र प्रमुख भी राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य हैं। प्रत्येक राज्य संगठन से अध्यक्ष अथवा महामंत्री में से एक तथा राज्य संगठन द्वारा मनोनीत एक प्रतिनिधि, प्रत्येक सम्बद्ध राज्य संगठन से एक महिला प्रतिनिधि तथा इसके

अतिरिक्त तीन सदस्य अन्य छोटे संगठनों से चुने जाते हैं। आमंत्रित सदस्य भी राष्ट्रीय कार्यकारिणी में सहभाग करते हैं। इन सबसे मिलकर राष्ट्रीय कार्यकारिणी बनती है जो महासंघ द्वारा निर्धारित नीतियों एवं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्यक्रमों को अन्तिम रूप देने तथा क्रियान्वयन कराने के कदम उठाती है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की वर्ष में तीन एवं राष्ट्रीय साधारण सभा की एक बैठक सुनिश्चित है। महासंघ विभिन्न सम्बद्ध संगठनों के कार्यों के अवलोकन करने, परामर्श देने, प्रोत्साहित करने के कार्य के अलावा अखिल भारतीय स्तर पर एक समान चार स्थायी कार्यक्रम तथा आंदोलनात्मक, प्रशिक्षनात्मक, रचनात्मक एवं सामाजिक सरोकारों के कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु नियोजित करता है।

सम्बद्धता

प्रदेश स्तरीय शिक्षक संगठन, विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षक संगठन एवं अन्य स्वतन्त्र शिक्षक संगठन, जो महासंघ के विधान, रीति-नीति एवं वैचारिक अधिष्ठान से सहमत हैं वे अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ से सम्बद्धता प्राप्त करने के लिए आवेदन कर सकते हैं। राष्ट्रीय कार्यकारिणी के अनुमोदन के पश्चात् ही किसी संगठन को सम्बद्धता प्रदान की जाती है।

उद्देश्य

- देश के राष्ट्रीय विचारों के सभी क्षेत्रों के शिक्षकों को एक मंच पर लाने का प्रयास करना।
- पूर्व प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक के समस्त शिक्षकों के शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्तर में सुधार लाना।
- शिक्षक वर्ग की समस्याओं, कठिनाइयों को शासन के समक्ष रखना एवं उनका समाधान कराना।
- देश में शिक्षा के स्वरूप को भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय जीवनधारा के अनुरूप बनाने का कार्य करना।
- शिक्षा की नीति निर्धारण, प्रबन्ध व्यवस्था एवं नियन्त्रण में शिक्षकों की उचित भागीदारी सुनिश्चित कराना तथा शिक्षा को गैर शैक्षिक प्रशासनिक नियन्त्रण से मुक्त कराना।
- विश्वविद्यालयों की स्वायत्ता को अक्षुण्य रखना।
- शिक्षकों में राष्ट्र, समाज तथा भारतीय मूल्यों के प्रति कर्तव्य की भावना जागृत करना।
- शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शासन द्वारा निर्धारित की जाने वाली नीतियों में अपेक्षित सुधार लाने हेतु सुझाव देना।
- शिक्षा के क्षेत्र में शोध, अनुसंधान व नवाचार को प्रोत्साहित करना एवं श्रेष्ठ भारतीय शिक्षा व्यवस्था के प्रति वैश्विक दृष्टि विकसित करना।
- विश्व के अन्य देशों में कार्य करने वाले शिक्षक संगठनों से सम्पर्क स्थापित करना।

- असाधारण एवं उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों का सम्मान करना।
- उत्कृष्ट साहित्य एवं पत्रिका प्रकाशन का कार्य करना।
- शिक्षा के विभिन्न विषयों पर विचार गोष्ठियां, परिसंवाद, भाषणमाला, शिविर, प्रदर्शनी, यात्राएँ, सम्मेलन आदि कार्यों की योजना करना।
- सामाजिक समरसता बढ़ाने, छात्रों, अभिभावकों एवं समाज के मध्य सामंजस्य स्थापित करने का कार्य करना।
- विषय-विशेषज्ञों की संदर्भ सूची का निर्धारण कर, उन्हें परस्पर जोड़ना।
- विद्वत परिषद का गठन करना।

कार्यक्रम

- प्रतिवर्ष 12 जनवरी (स्वामी विवेकानन्द जयन्ती) से लेकर 23 जनवरी (नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती) तक कर्त्तव्य बोध दिवस (संकल्प दिवस) मनाना।
- भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को राष्ट्रीय स्वाभिमान दिवस के रूप में समारोहपूर्वक मनाना।
- गुरुपूर्णिमा पर गुरु वन्दन के रूप में भारतीय शिक्षक परंपरा के प्रकाश में कार्यक्रम करना तथा शैक्षिक दृष्टि से असाधारण एवं उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों को सम्मानित व पुरस्कृत करना।
- शिक्षा के किसी एक विषय को लेकर प्रतिवर्ष सम्पूर्ण देश में जनजागरण अभियान चलाना।
- विषय-विशेषज्ञों की संदर्भ सूची केन्द्र स्तर पर तैयार करना एवं उसका उचित उपयोग करना।
- समसामयिक विषयों पर सम्पूर्ण देश में संगोष्ठी, कार्यशालाएँ, भाषणमाला एवं परिसंवाद आयोजित करना।
- शैक्षिक विषयों पर पुस्तकों का प्रकाशन, शैक्षिक मंथन मासिक पत्रिका का नियमित प्रकाशन तथा राज्यों द्वारा मासिक/ पाक्षिक पत्रिकाओं का प्रकाशन करना।
- शिक्षकों की समस्याओं के समाधान के लिये सभी प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करना एवं शक्ति प्रदर्शन करना।
- शासन द्वारा निर्धारित की जाने वाली शिक्षक विषयक नीतियों पर महासंघ का पक्ष प्रस्तुत करना।
- कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए संभाग, प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर पर कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग आयोजित करना।
- विश्वविद्यालय, प्रदेश एवं अखिल भारतीय स्तर पर शिक्षकों के सम्मेलन आयोजित करना।

- संवर्गशः (यथा प्राथमिक संवर्ग, माध्यमिक संवर्ग, उच्च शिक्षा संवर्ग तथा महिला संवर्ग) सम्मेलन आयोजित करना।
- शिक्षा क्षेत्र में राष्ट्रभाव की जाग्रति के लिए वैचारिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों एवं सम्बद्ध शिक्षक संगठनों द्वारा समाज सेवा के कार्य करना।
- शिक्षा के व्यावसायीकरण को रोकने के लिए सार्थक कदम उठाना।

आगामी योजना

- महिला संवर्ग की सक्रियता बढ़ाने एवं विभिन्न कार्यक्रमों में उनके सहभाग को बढ़ाने का कार्य करना।
- प्रत्येक राज्य में राज्य स्तरीय महिला सम्मेलनों तथा राज्यस्तरीय महिला कार्यकर्ता अभ्यासवर्ग का आयोजन करना। मेट्रो शहरों में महिला कार्यकर्ता बैठकें आयोजित करना।
- विद्वत परिषद का गठन करना।
- अखिल भारतीय स्तर पर शिक्षकों की समस्याओं के समाधान के लिए आन्दोलनात्मक कदम उठाना।
- विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिए समसामयिक विषयों पर 'समर्थ भारत' आयाम के अन्तर्गत प्रतियोगिता का आयोजन करना एवं सफल छात्रों को पुरस्कृत करना।
- केन्द्र के एक समान स्थायी कार्यक्रमों में नवाचार लाना एवं उनमें समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं सामाजिक संगठनों को अधिकाधिक जोड़ना।
- महासंघ के वैचारिक अधिष्ठान की पूर्ति के लिए जनजागरण अभियान चलाना।
- शिक्षा से सम्बन्धित सेवाकार्यों को स्थायी स्वरूप प्रदान करना एवं उनमें भारतीय दृष्टिकोण को समाहित करना।
- निजी क्षेत्र के शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की संगठन में सक्रियता को बढ़ाना ।
- निजी क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों की सेवा शर्तों में सुधार लाना।
- शैक्षिक विषयों पर दक्षिण एशिया क्षेत्रीय देशों एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद आयोजित करना।